The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 11 | November 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

माध्यमिककालीन नेपाली साहित्य में मोतीराम भट्ट का योगदान

Laxmi Prasad Sharma
Asst. Professor, Department of Hindi
Govt. Sanskrit College Samdong East Sikkim
laxmi1715@gmail.com

DOI; **10.5281/zenodo.14329485**

शोधसार

मोतीराम भट्ट, जो लगभग 15 दशक पहले सक्रिय थे, नेपाली साहित्य के अद्वितीय रचनाकार थे, जिनका योगदान आज भी महत्वपूर्ण है। उन्होंने अल्पायु में काव्य, गद्य, गजल और अनुवाद जैसी विधाओं में गहरी छाप छोड़ी। उनका कार्य भानुभक्त आचार्य और भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से प्रेरित था। भट्ट ने नेपाली रामायण के बालकाण्ड को प्रकाशित कर जन-जन तक पहुँचाया। भट्ट की काव्य दृष्टि में कविता एक नैसर्गिक प्रवाह थी, जो बाहरी साधनों से नहीं, बल्कि सहजता से उत्पन्न होती थी। उनकी रचनाओं में श्रृंगार रस का प्रमुख स्थान था, साथ ही भक्ति और आस्था का भी पुट था। वे नेपाली काव्य में श्रृंगार रस के प्रवर्तक माने जाते हैं। हालाँकि, उनका योगदान समाज में उतना सम्मानित नहीं हुआ, जितना होना चाहिए था। फिर भी उनका साहित्यिक योगदान आज भी प्रेरणादायक है। मोतीराम भट्ट द्वारा अल्पकाल में किये गये साहित्यिक योगदान को निम्न बिंदुओं में निष्कर्षित करने का प्रयास किया जा सकता है-

i. नेपाली गजल का प्रवर्तन

मोतीराम भट्ट को पहले नेपाली गजलकार के रूप में जाना जाता है। डॉ. कृष्णहरि बराल ने नेपाली गजल लेखन की परम्परा उल्लेख किया है "नेपाली में गजललेखन प्रारम्भ करने में मोतीराम भट्ट का बनारस निवास तथा वहाँ के प्राप्त उनकी शिक्षा तथा साहित्यकार एवं सङ्गीतकर्मियों के साथ रहनसहन महत्वपूर्ण है सैथ ही तत्कालीन दरबारी वातावरण एवं सुरासुन्दरी तथा सङ्गीतप्रति दर्बारियों का की रुचि दूसरा महत्वपूर्ण कारक के रूप में देखा जाता है।"[1] उन्होंने उर्दू साहित्य से प्रभावित होकर गजल लेखन की परंपरा को नेपाली भाषा में स्थापित किया। उनकी गजलों में प्रेम, विरह, सौंदर्य और मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति होती थी। उन्होंने नेपाली साहित्य में भावात्मक और लयात्मकता का समावेश करते हुए गजल को एक नई पहचान दी। इससे नेपाली साहित्य में एक नया साहित्यिक आयाम जुड़ा, जो बाद में कई लेखकों द्वारा आगे बढ़ाया गया। गणेशबहादुर प्रसाईं के अनुसार मोतीराम भट्ट ही नहीं अपितु उस समय मोतीराम भट्ट के समकालीन सभी गजलकार अपने नाम के साथ उपना जोड़ कर गजल लिखा करते थे जैसे -मोतीराम 'मोती' लक्ष्मीदत्त पन्त 'इन्दु' अञ्जद हुस्सैन 'अञ्जन' नरदेव पाण्डे 'सुधा' गोपीनाथ लोहनी 'नाथ' शम्भुप्रसाद ढुङ्गेल 'गजब' वा 'शम्भू' र रत्नलाल 'रत्न' आदि।"[2]

ii. श्रृंगारिक और भावात्मक काव्य

माध्यमिककालीन नेपाली कविता के प्रवर्तक मोतीराम भट्ट को माना जाता है। भट्ट की कविताओं और गजलों में श्रृंगार रस की प्रधानता थी। "मोतीराम भट्ट ने समस्यापूर्ति, गजल, फूटकर कविता तथा खण्डकाव्य के माध्यम से मध्यकालीन श्रृंगारिक धारा को समृद्ध किया। माध्यमिककालीन पूर्वार्द्ध टरण को श्रृंगारिक धारा मुख्यतः मोतीराम भट्ट एवं मोतीमण्डली की सृजन से निर्मित हुआ था।"[3]

मोतीराम भट्ट की रचनाओं में प्रेम, सौंदर्य, और मानवीय संवेदनाओं का कोमल और भावपूर्ण चित्रण मिलता है। श्रृंगार रस के साथ-साथ भक्ति, प्रेम-प्रणय, सामाजिक समस्याओं, मित्रप्रशंसा आदि समसामयिक विषयों पर उनकी लेखनी चलती रही। मोतीमण्डली के सदस्यों के गजल 'संगीतचन्द्रोदय' में संकलिक हैं। भक्ति-भाव में समर्पित कुछ गजल हैं जो परम्परागत गजल परम्परा को पर प्रश्नचिह्न खड़ा करते हैं। उन्होंने गजल को प्रेमप्रणय से बाहर निकाल कर भक्तिसूत्र के बन्धन में बाँध दिया है। जिसमें कवि अपने आराध्य श्रीराम को सर्वव्यापक बताते हैं-

"यता हेर्यो यतै मेरा, नजरमा राम प्यारा छन्।
उता हेर्यो उतै मेरा नजरमा राम प्यारा छन्।
यसो भन्छौ त फल्फुल्मा, उसो भन्छौ त जल्थल्मा।
जता हेर्यो उतै मेरा, राम नजरमा राम प्यारा छन्।"[4]

"माध्यमिककालीन श्रृंगारिक धारा का मुख्य प्रेरक तत्त्व के रूप में तत्कालीन दरबारिया भोगविलास तथा मनोरंजन रहा है।"[5] उनके काव्य में श्रृंगारिक भावनाओं के साथ-साथ सामाजिक मुद्दों पर भी संवेदनशील दृष्टिकोण देखा जा सकता है। उन्होंने अपनी कविता में न केवल रूप और प्रेम की महिमा की है, बल्कि गहरे भावनात्मक और आध्यात्मिक पहलुओं को भी उजागर किया है।

iii. भानुभक्त आचार्य का पुनरुद्धार

कवि भानुभक्त आचार्य नेपाल के एक महान कवि और अनुवादक थे, जिन्होंने 19वीं शताब्दी में नेपाली साहित्य में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया था। उन्होंने रामायण के अलावा अन्य कई महत्वपूर्ण ग्रंथों का भी अनुवाद किया, जिनमें से अधिकांश नेपाली में पहली बार अनुवादित हुए थे। भानुभक्त रामायण नेपाली में एक प्रसिद्ध ग्रंथ है, जो नेपाल के स्कूलों और कॉलेजों में पढ़ाया जाता है। यह ग्रंथ नेपाली साहित्य का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और नेपाल के सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण अंग है।

1948 सालमा कवि भानुभक्त आचार्यको जीवन चरित्र में उन्होंने निम्न प्रकार का तर्क प्रस्तुत किया हैं- "भक्ति रस में अब आगे भी भानुभक्त के बराबर का कोई कवि हो सकता है, ऐसा मुझे नहीं लगता। फिर भी, यह ईश्वर की सृष्टि है, अगर हो भी गए तो यिनके बराबर ही होंगे। इनके बढ़कर कोई और कभी नहीं होगा, यह मैंने दृढ़तापूर्वक लिखा है। रात-दिन की बोलीचाली जैसी सहजता में कविता कर सकने की सामर्थ्य अब तक केवल इन्हीं में देखी गई है। बाद में आने वालों की तुलना तो बाद में ही की जा सकेगी।"[6] भानुभक्त आचार्य का नेपाली साहित्य में योगदान अतुलनीय है, और उनके अनुवादों ने नेपाली भाषा को समृद्ध बनाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

कृष्ण धारावासी अपनी लेख 'युवाहरू र मोतीहरू' में इसका उल्लेख किया हैं- "भारत के बनारस में रहकर नेपाली भाषा साहित्य में खोज अनुसन्धान, सिर्जन, संगठन तथा प्रचारप्रसार जैसे बहुआयामिक कार्य करते हुए मोतीराम भट्ट ने आनेवाली साहित्यकारों के समक्ष एक

रोडम्याप रख दिया। उनके कार्यशैली से दूसरी तरफ यह भी संदेश गया है कि केवल भानुभक्त की तरह लिखने से नहीं अपितु उसको हर पाठकों के समक्ष पहुँचानी होगी।"[7]

मोतीराम भट्ट का एक बड़ा योगदान आदिकवि भानुभक्त आचार्य के कार्यों को पुनः प्रकाश में लाना था। मोतीराम भट्ट ने अपने जीवन का जो मूल्यवान समय भानुभक्त आचार्य को नेपाली साहित्य के समर्पित सेवक के रूप में प्रतिष्ठित कराने में लगाया, यदि वह समय अपनी स्वयं की प्रतिभा को प्रदर्शित करने में लगाया होता, तो वे सबसे ऊंचे साहित्यकारों में गिने जाते। उन्होंने अपने कृतित्व को पीछे रखकर दूसरों की प्रतिभा को प्राथमिकता दी। नेपाली साहित्येतिहास में भानुभक्त आचार्य एक प्रतिष्ठित व्यक्तित्व हैं। उन्होंने नेपाली भाषा में सरल, सरस रामायण की रचना कर प्रथम नेपाली रामायणकार होने का गौरव प्राप्त किया है। मोतीराम भट्ट ने प्रशंसा करते हुए अपनी रचना कवि भानुभक्तको जीवन चरित्र में लिखा है- "यद्यपि गोर्खा भाषा में कवि भानुभक्त से पूर्व बहुत नामचिह्न कवि हुए हैं तथापि कविताक के मर्म को जानकर भाषा पद्य लिखने वाले कवियों में आदिकवि भानुभक्त ही हुए।"[8]

एक साधारण किसान परिवार के भानुभक्त को उनकी नैसर्गिक प्रतिभा और रचनाओं को विश्वस्तर पर पहुँचाने का कार्य किया। उन्होंने उन्हें सामान्य कवि से महाकवि और महाकवि से आदिकवि बनाने का संकल्प पूरा किया। भारत की विद्यानगरी काशी में पले-बढ़े मोतीराम भट्ट रामायण और रामायणकारों की भारत में प्रतिष्ठा से भली-भांति परिचित थे, और जानते थे कि इस भक्ति-रस का आम व्यक्ति पर कितना बड़ा प्रभाव होता है। किसी भी भाषा-साहित्य में रामायण, महाभारत, पुराण आदि की रचनाएँ उस भाषा की गरिमा को बढ़ाती हैं, और एततभाषी समाज इसे गर्व से अनुभव करता है, जैसा कि भानुभक्त और उनकी लिखी रामायण पर आज विश्वभर के नेपाली भाषी समुदाय करते हैं। इससे स्पष्ट है कि मोतीराम भट्ट सचेत और दूरदर्शी थे। उन्होंने नेपाली समाज को भानुभक्त आचार्य के रूप में प्रथम रामायणकार और नेपाली को प्रथम रामकाव्य प्रदान किया। एक कुशल अन्वेषक ही दूसरे नैसर्गिक रचनाकार की प्रतिभा को पहचान सकता है।

भानुभक्त आचार्य का जीवनचरित्र लिखते समय मोतीराम भट्ट ने भानुभक्त की रचनाओं और आदर्श व्यक्तित्व का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया। मोतीराम भट्ट यथार्थवादी कवि थे और तत्कालीन नेपाली साहित्य के प्रतिनिधि रचनाकार भी। भानुभक्त की रामायण को समाज के समक्ष प्रकाशित कर उन्होंने नेपाली साहित्य में अद्वितीय योगदान दिया। भानुभक्त को आदिकवि का स्थान दिलाने का श्रेय मोतीराम भट्ट को जाता है। भानुभक्त ने नेपाली में रामायण का अनुवाद किया था, लेकिन उनके कार्यों को सही सम्मान और पहचान नहीं मिल पाई थी। मोतीराम ने भानुभक्त आचार्य की रचनाओं को पुनः प्रकाशित किया और नेपाली समाज में उनके योगदान को स्थापित किया। इसके माध्यम से मोतीराम ने न केवल भानुभक्त के साहित्यिक योगदान को अमर बनाया, बल्कि नेपाली साहित्य को एक नया गौरव प्रदान किया।

iv. पत्रकारिता और साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन

मोतीराम भट्ट ने पत्रकारिता के माध्यम से नेपाली साहित्य और भाषा के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। "गोरखापत्र 1958 में काठमाण्डौँ से निकली गेरखापत्र ने नेपाली साहित्य के परिष्कार तथा अभिवृद्धि, प्रचार-प्रसार में अद्वितीय सहयोग किया है। शुरुआत में नरदेव मोतीकृष्ण के पशुपति छापाखाना से निकलकर बादमें पुनः पछि अपना छापाखाना में छपने वाली इस पत्रिका को जयपृथ्वीबहादुर सिंह का संरक्षण प्राप्त होने के पश्चात इसने बहुत उन्नति किया।"[9]

एक तरफ बनारस निवास के दौरान मोतीराम भट्ट 'भारतजीवन छापाखाना' के साथ सम्बद्ध होकर नेपाली पुस्तकों के प्रकाशन करते हुए पाये जाते हैं तो दूसरी तरफ कृष्णदेव पाण्डे के साथ मिलकर 1945 में ठहिटी काठमाण्डौँ में 'मोतीकृष्ण धीरेन्द्र कम्पनी' नामक प्रकाशन संस्था की स्थापना करते हुए दिखाई पड़ते हैं। मोतीराम भट्ट को काशी में 'भारतजीवन' प्रेस में प्रकाशन प्रबन्धन हेतु रामकृष्ण वर्मा का सहयोग प्राप्त हुआ तो काठमाण्डौँ में कृष्णदेव पाण्डे का सक्रीय सहयोग से मोतीराम भट्ट ने ठहिती में 'मोतीकृष्ण कम्पनी' नामक मुद्रण, प्रकाशन संस्थान स्थापित कर विक्रय तथा वितरणादि कार्य सम्पादन किया।[10]

इसके माध्यम से उन्होंने अन्य लेखकों को भी प्रोत्साहित किया और नेपाली साहित्य में नये विचारों और लेखकों को सामने लाने का कार्य किया।

v. साहित्यिक पुनर्जागरण

नेपाली साहित्यिक पुनर्जागरण के जनक के रूप में कवि मोतीराम भट्ट का शीर्षस्थ स्थान रहा है। उन्होंने अपने समय के नेपाली साहित्य को आधुनिक दिशाकी ओर प्रेरित करने का कार्य किया है। साहित्यिक पुनर्जागरण का उद्देश्य जनजागरण और सांस्कृतिक नवजागरण था, जो समाज को नई चेतना और दिशा प्रदान करने का कार्य करता है। इस संदर्भ में मोतीराम भट्ट का नाम महत्वपूर्ण है, जिन्होंने अपने समय में साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में नवीनता और उदात्तता की भावना को बढ़ावा दिया। उनकी मोतीमण्डली ने बनारस और काठमांडू दोनों ही स्थानों पर साहित्यकारों को प्रेरित किया और युवाओं को साहित्य सृजन के प्रति जागरूक किया। मोतीराम भट्ट का साहित्यिक योगदान आज भी युवा रचनाकारों के लिए प्रेरणास्रोत है, और उनके प्रयासों का प्रभाव नेपाली साहित्य के विकास में प्रत्यक्ष देखा जा सकता है।भट्ट ने न केवल काव्य, गजल और गद्य के क्षेत्रों में योगदान दिया, बल्कि मोतीमण्डली के माध्यम से साहित्यिक समाज को संगठित करने और नए लेखकों को प्रोत्साहित करने का कार्य भी किया। नकाया नहीं जा सकता है कि उनकी रचनाओं में परंपरागत मूल्यों के साथ आधुनिक सोच का समन्वय था, जिससे नेपाली साहित्यिक परिदृश्य का विकास हुआ।

vi. अनुवाद और अन्य भाषाओं से प्रभाव:

मोतीराम ने न केवल मौलिक रचनाएँ कीं, बल्कि कवि भानुभक्त आचार्य द्वारा अपनाये अनुदित मार्ग का अनुशरण भी किया। उन्होंने अपने प्रेरक तथा आदर्श व्यक्ति की भाँति अन्य भाषाओं से साहित्यिक कृतियों का अनुवाद भी किया। नेपाली नाटक के विकास की चर्चा करते हुए लेकक दुर्गाप्रसाद दहाल ने अपनी रचना – 'नेपाली नाटक, निबन्ध, भाषासाहित्य र इतिहास' माध्यमिक में मोतीराम भट्ट द्वारा उर्दूनाटकों से प्रभावित होकर कालिदाक के अभिज्ञान शाकुन्तलम् का अनुवाद करने का उल्लेख किया है। नके अनुसार ""तत्कालीन दरबार में प्रदर्शित फारसी-उर्दू नाटकों से प्रभावित होकर, मोतीराम भट्ट ने वि.सं. 1944-48 के बीच कालिदास के अभिज्ञान शाकुन्तलम का अनुवाद शाकुन्तला नाटक (1944-1948) किया, जो बालकृष्ण सम द्वारा लिखित मुटुको व्यथा (1986) से पहले की समयावधि में नेपाली नाटक के माध्यमिक काल में शामिल किया जाता है।"[11]

स्पष्ट है कि मोतीराम भट्ट द्वारा किए गए कालिदास के अभिज्ञान शाकुन्तलम के अनुवाद के बारे में बात कर रहा है, जो तत्कालीन दरबार में प्रदर्शित फारसी-उर्दू नाटकों से प्रभावित था। इस अनुवाद को नेपाली नाटक के माध्यमिक काल में शामिल किया गया है, जो बालकृष्ण सम द्वारा लिखित मुटुको व्यथा से पहले की समयावधि में हुआ था। मोतीराम भट्ट का प्राथमिक अध्ययन क्षेत्र उर्दू, हिंदी और संस्कृत रहा है अतः उन्होंने इसी से प्रेरणा लेकर नेपाली साहित्य को समृद्ध किया। उनका यह योगदान नेपाली भाषा को साहित्यिक रूप से समृद्ध और

विकसित करने में सहायक सिद्ध हुआ। माध्यमिककालीन नेपाली साहित्येतिहास में उन्होंने ही सर्वप्रथम साहित्य के नए रूपों, जैसे कि गजल, समस्यापूर्ति और गीत, को नेपाली साहित्य में सफलतापूर्वक प्रवेश दिलाया।

vii. संवेदनशील और जनोन्मुखी लेखन

मोतीराम भट्ट के साहित्य में गहरी संवेदनशीलता थी। उनकी रचनाएँ समाज के विभिन्न वर्गों और उनकी समस्याओं को समझने और व्यक्त करने में सक्षम थीं। उन्होंने समाज की विषमताओं, मानव पीड़ा, और जीवन की अनिश्चितताओं को अपनी कविताओं के माध्यम से सामने रखा। "प्रह्लाद भक्तिकथा एक प्रौढ खण्डकाव्य है जिसमें निरंकुश राणा शासनकालीन शिक्षा पद्धति के ऊपर आक्रमण करते हुए उक्त खण्डकाव्य में निरंकुश मानव प्रवृत्ति को प्रकारान्तर द्वारा हिरण्यकशिपु के रूप में खड़ा किय है, तो वहीं नेपाली जनता को प्रह्लाद के रूप में इन दोनों के बीच में द्वन्द्व की चिंगारी भड़काने वाले और अन्ततः हिरण्यकशिपु को पतन कराने में रूचि रखते दिखाई पड़ते हैं।"[12]

मोतीराम भट्ट की लेखनी व्यक्तिगत अनुभवों और सामाजिक सत्य के बीच एक संतुलन स्थापित करती थी। इसी प्रकार इस प्रकार ह्रासोन्मुख नेपाली एवं भारतीय समाजिक स्थिती से मोतीराम भट्ट बेहत परेशान दुखी हुए और इस सामाजिक कुरीतियों पर व्यंग्य करते हुए 'पञ्चक प्रपञ्चक' की रचना की है। तत्कालीन राणा काल में पञ्चक के पाँच दिन जुवा खेलने की कुप्रथा अथवा कुलत थी। इस खेल से धन सम्पत्ति का नुक्सान तो होता ही था, लगातार तास-जूवा खेलने से स्वस्थ्य पर भी गहरा असर पड़ता था। इस कुरीति पर प्रहार करते हुए 'पञ्चकप्रपञ्च' की रचना की गयी।"[13] स्पष्ट है कि मोतीराम भट्ट संवेदनशील लेखक तो थे ही मनोन्मुखि रचनाकार भी थे।

viii. कविता और गद्य में योगदान

मोतीराम केवल कवि नहीं थे, बल्कि एक महत्वपूर्ण गद्यकार भी थे। उन्होंने गद्य लेखन में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिसमें निबंध, आलोचना, और अनुवाद शामिल हैं। उनके गद्य में भाषा की स्पष्टता, सरलता और विचारों की सजीवता देखने को मिलती है। उन्होंने गद्य के माध्यम से भी साहित्यिक विमर्श को बढ़ावा दिया और नेपाली भाषा के समृद्धिकरण में योगदान दिया। मोतीराम भट्ट ने नेपाली साहित्य में आधुनिकता का सूत्रपात किया और इसे एक नई दिशा दी। उनकी गजल, कविता, गद्य, और पत्रकारिता के माध्यम से उन्होंने नेपाली भाषा और साहित्य को समृद्ध किया। वे न केवल एक रचनाकार थे, बल्कि एक साहित्यिक पुनर्जागरण के प्रवर्तक थे, जिन्होंने भानुभक्त आचार्य के योगदान को पुनर्जीवित किया और नेपाली साहित्य को वैश्विक साहित्यिक धारा से जोड़ने का प्रयास किया। अल्पायु में निधन के बावजूद, उनका योगदान नेपाली साहित्य के विकास में अमूल्य है, और वे सदैव एक प्रमुख साहित्यकार के रूप में स्मरण किए जाते रहेंगे।

निष्कर्ष

मोतीराम भट्ट नेपाली साहित्य के एक महत्वपूर्ण साहित्यकार थे, जिनका योगदान नेपाली भाषा और साहित्य के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण है। इतिहास के पन्नों में सीमित और जनता द्वारा विस्मृत कवि मोतीराम भट्ट जैसे महान रचनाकार, जिनकी स्मृति केवल इतिहास के पृष्ठों को पलटने पर ही जीवित होती है, आज भी प्रासंगिक हैं। लगभग 15 दशक पूर्व, अपने समय के युवाओं में ऊर्जा का संचार भरने वाले इस युवा कवि ने नेपाली साहित्य में जो योगदान दिया, वह अतुलनीय है। भट्ट ने अपने काव्य में समाज और संस्कृति को अभिव्यक्ति दी और उनकी रचनाओं में जो नैसर्गिक ऊर्जा थी, वह आज भी हमारे आधुनिक, तकनीकी और भौतिक संपन्न संसार में आवश्यक प्रतीत होती है। उनके विचारों में युवा पीढ़ी को प्रेरित करने की अपार क्षमता थी, लेकिन दुर्भाग्यवश, उनकी इस ऊर्जा और दृष्टि की उपेक्षा कर

दी गई है। वर्तमान पीढ़ी की चेतना में यदि उनकी इस नैसर्गिक ऊर्जा को स्थान मिले, तो साहित्य में एक नई स्फूर्ति का संचार संभव है। उन्हें आधुनिक नेपाली कविता का पितामह भी कहा जाता है। उनके योगदान को विभिन्न साहित्यिक क्षेत्रों में देखा जा सकता है। मोतीराम भट्ट ने नेपाली कविता में छंद और शैली में सुधार करते हुए उसे आधुनिक रूप दिया। उन्होंने भावपूर्ण और सजीव कविताओं की रचना की, जिनमें प्रेम, प्रकृति, और जीवन के विविध पहलुओं का चित्रण मिलता है। उनकी प्रेम कविताएँ और गीत नेपाली साहित्य में काफी लोकप्रिय हुए। उनकी कविताओं में श्रृंगार और भावनाओं की प्रगाढ़ता दिखाई देती है, जो उस समय के अन्य कवियों से अलग थी मोतीराम भट्ट ने भानुभक्त आचार्य की रचनाओं को पुनः प्रकाशित किया और उन्हें लोकप्रिय बनाया। भानुभक्त की 'रामायण' को पहली बार प्रकाशित कराने का श्रेय मोतीराम भट्ट को ही जाता है। इस कार्य से भानुभक्त आचार्य को नेपाली साहित्य में मान्यता मिली।

मोतीराम भट्ट का योगदान नेपाली साहित्य में अत्यंत महत्वपूर्ण और अविस्मरणीय है। वे न केवल कवि बल्कि गजलकार, गद्यकार और साहित्यिक प्रचारक भी थे। उनका लेखन, विशेष रूप से गजल और श्रृंगार रस में उनकी विशेष शैली, ने नेपाली काव्य को नई दिशा दी। उनका योगदान भानुभक्त आचार्य की रचनाओं को पुनः प्रकाशित करने और उन्हें नेपाली साहित्य में प्रतिष्ठित करने में भी महत्वपूर्ण था। इसके अलावा, उन्होंने नेपाली गजल लेखन की शुरुआत की और भारतीय साहित्यिक परंपराओं को नेपाली साहित्य में सम्मिलित किया। उनकी काव्य दृष्टि में कविता एक स्वाभाविक प्रवाह के रूप में थी, जो बाहरी प्रभावों से मुक्त थी। मोतीराम भट्ट ने श्रृंगार रस के साथ भक्ति और सामाजिक मुद्दों को भी अपनी कविताओं में स्थान दिया, जिससे उनकी रचनाओं में गहरी भावनात्मक और आध्यात्मिक अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। उनका योगदान न केवल अपने समय में, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी प्रेरणादायक रहेगा। उनके साहित्यिक कार्य ने नेपाली साहित्य की विकास यात्रा को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया और उन्हें एक युगप्रवर्तक कवि के रूप में स्थापित किया।

सन्दर्भ :

[1] बराल, हरिकृष्ण 2068) .वि.सं(गजल सिद्धान्त र परम्परा .पृ197-

[2] प्रसाईं,गणेशबहादुर. (2004). माध्यमिककालीन काव्य साहित्य को विवेचना. परिशिष्ट - पृ.सं 211

[3] ओझा, रामनाथ 80-2079).वि.सं .(नेपाली कविताकाव्य .पृ29-

[4] भट्टराई, शरद्चन्द्र शर्मा- शर्मा रमा एवं शिव रेग्मी. (2003). मोतीराम भट्ट र संसर्गी कवि. पृ-154

[5] ओझा, रामनाथ 80-2079).वि.सं .(नेपाली कविताकाव्य .पृ28-

[6] भट्ट, मोतीराम. (2001). कवि भानुभक्तको जीवनचरित्र. (प्रकाशक साझा-प्रकाशन). पृ.सं. 24

[7] मिश्र डिल्लीराम. (2009). युवावर्ष मोतीपुरस्कार सर्जक र सिर्जना. पृ-16

[8] मोतीराम भट्ट. (2006). कवि भानुभक्तको जीवनचरित्र. पृ- 4

[9] शर्मा, तारानाथ) .वि.सं (.नेपाली साहित्यको इतिहास. पृ-76

[10] हुमागाईं जनकप्रसाद.(1982).मोतीस्मृति ग्रन्थ .पृ126-

[11] दहाल, दुर्गाप्रसाद 2058) .वि.सं .(नेपाली नाटक, निबन्ध, भाषासाहित्य र इतिहास .पृ5-

[12] प्रसाईं गणेशबहादुर . (2004). माध्यमिक कालीक काव्य साहित्यको विवेचना. पृ-143

[13] प्रधान, कृष्णचन्द्रसिंह. (2001). साझा समालोचना. पृ- 17